गुरु नानक – सबद २३

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ४

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

सार: कायनाती एकता की पूरी समझ हासिल करने के लिए, जिज्ञासु को सचेत रूप से सुनने, आत्म-अन्वेषण करने और व्यवहार में जीने के प्रयास की आवश्यकता होती है। जब साधक स्वयं को जान जाता है, तो प्रकृति के कई पहलुओं को स्वीकार करने के लिए आंतरिक और बाहरी गुणों की गंभीर समझ उभरती है।

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥

तीर्थयात्रा, तपस्या, दान और भिक्षा जैसी प्रथाओं को धार्मिक पालन के हिस्से के रूप में किया जाता है।

जे को पावै तिल का मानु ॥

यह मन को क्षण भर की संतुष्टि का एहसास दिलाते हैं, जिसका रत्ती भर भी मूल्य नहीं है।

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥

सक्रिय रूप से सुनने, आत्मसात करने और आत्मनिरीक्षण के माध्यम से मन को सशक्त बनाने से गहरी समझ हासिल होती है।

अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥

यह आत्म-चिंतन की तीर्थयात्रा पर निकलने जैसा है, जो मन को शुद्ध करने में मदद करता है।

सभ गुण तेरे मै नाही कोइ ॥

सभी गुण अदृश्य सर्वव्यापी ऊर्जा से पैदा होते हैं, इस वास्तविकता की तरफ़ समर्पण से झूठी पहचान का अहंकार ग़ायब हो जाता है।

विणु गुण कीते भगत न होइ ॥

आंतरिक और बाहरी गुणों पर विचार किए बिना कोई भी समर्पित साधक नहीं बन सकता।

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥

आध्यात्मिक ज्ञान के खज़ानों पर चिंतन को केन्द्रित करके उनका पालन करें।

सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥

सत्य सबसे गुणी गुण है; यह मन को हमेशा प्रसन्नता की स्थिति में रखता है।

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥

समय, क्षण, तिथि और दिन अज्ञात हैं।

कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥

वह ऋतु और महीना अज्ञात है जब निराकार सर्वव्यापी चेतना स्वयं एक साकार रूप में प्रकट हुई।

वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥

विद्वान, पुजारी स्थापना के क्षण को समझने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि इसका उल्लेख 'पुराण' में नहीं है।

वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥

धार्मिक विद्वान इसे समझ नहीं पाए हैं क्योंकि यह 'क़ुरान' में नहीं लिखा गया है।

थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥

प्रबुद्ध सन्यासी, तपस्वी भी स्थापना के दिन, हफ़्ते, मौसम और महीने से अनजान हैं।

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥

रचयिता, सर्वव्यापी चेतना, ही जानती है जब वह स्वयं रचना के रूप में प्रकट होती है।

किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥

कोई कैसे दावा, उपमा और इज़हार कर सकता है, और परिचित हो सकता है?

नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥

नानक कहते हैं कि हर कोई स्वयं को दूसरों की तुलना में अधिक प्रबुद्ध बताता है।

वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥

सर्वोच्च महानता चिंतन में है क्योंकि सारी जागरूकता उसी से पैदा होती है।

नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

नानक कहते हैं कि जो लोग स्वयं को प्रबुद्ध घोषित करते हैं वे कोई आध्यात्मिक प्रगति नहीं कर सकते। (२१)

तत्त्व: गुरु नानक के अनुसार, चिंतन के साथ संबंध स्थापित करने से शक दूर होते हैं, गलत धारणाएं स्पष्ट होती हैं और अहंकार को ख़त्म कर आध्यात्मिक प्रगति का रास्ता बनता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com